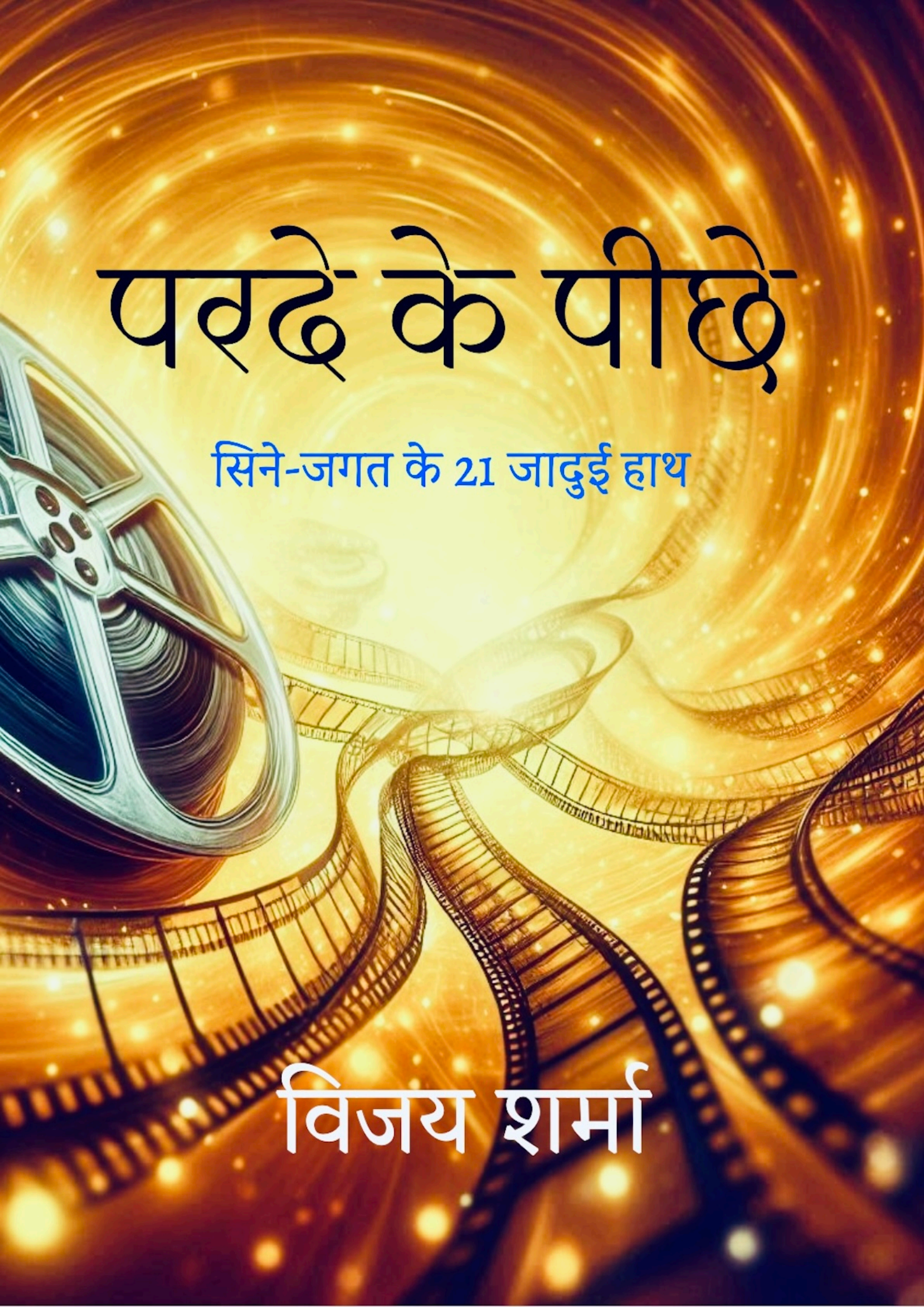
पर्दे के पीछे
सिने-जगत के 21 जादुई हाथ
विजय शर्मा

परदे के पीछे:

सिने-जगत के 21 जादुई हाथ

विजय शर्मा

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: अगस्त, 2024

© विजय शर्मा

पिताजी श्रीमान पंडित द्विजेंद्र देव शर्मा को समर्पित, जिनका एक शौक फ़ोटोग्राफ़ी था। वे कैमरे से फ़ोटो खींचते, अंधेरे कमरे में धोते और उसे हाथ से कलर भी करते। जब वे अंधेरे कमरे में निगेटिव से पोजेटिव बनाते और तनिक-सी रोशनी डालते, तो जो जादू होता था, वह मेरे लिए किसी चमत्कार से कम न होता था। आज भी उस जादुई चमत्कार के असर में हूँ। क्लिक करते और अब बस टच करते, चीजें दस्तावेज में बदल जाती हैं, है, न, जादू!

अनुक्रम

अपनी बात 5

स्क्रीनप्ले राइटर

डॉल्टन ट्रंबो: जीवन के उतार-चढ़ाव 17

ली ब्रैकेट: द क्वीन ऑफ़ स्पेस ऑपेरा 22

इंगमर बर्गमैन: संयोग से बने स्क्रीनप्ले लेखक 27

सत्यजित राय: अंधेरे में नोट्स लेने वाले 32

जीन-क्लाउड कैरिएर: नए विचारों की खोज 38

एम. टी.: स्क्रीनप्ले राइटिंग में क्रांति 43

नोरा एफ़्रॉन: स्क्रीनप्ले में रोमांस-कॉमेडी 49

एरिक रॉथ: सफ़ल फ़िल्मों का लेखक 54

अनुराग कश्यप: डॉर्क थीम के लेखक 59

सिनेमाटोग्राफ़र

ऑर्थर मिलर: श्वेत/श्याम एवं रंगीन में महारथ 69

ग्रेग टोलैंड: डीप फ़ोकस का जनक 76

दिलीप गुप्ता: कैमरे के पीछे 84

राधु करमाकर की तीसरी आँख 94

वी. के. मूर्ति: प्रकाश का जादूगर 103

राउल कोटार्ड: गोदार का सिनेमाटोग्राफ़र 108

बालु महेंद्र: तमिल सिनेमा को नवजीवन 115

के. के. महाजन: विलक्षण प्रतिभा 125

मधु अंबाट कला और कमर्शियल फ़ोटोग्राफ़ी में माहिर 132

प्रतिभावान सिनेमाटोग्राफ़र: संतोष शिवन 144

अपनी बात

फ़िल्म बनाना एक सामूहिक कर्म है। इस कार्य में निर्देशक, स्क्रीनप्ले राइटर, सिनेमाटोग्राफ़र, एडिटर कई विशेषज्ञ लोगों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। और भला बिना अभिनेताओं के फ़िल्म बन सकती है? कभी नहीं। भले ही ये अभिनेता जो किरदार निभा रहे हों, वह व्यक्ति, कोई शहर अथवा वस्तु विशेष ही क्यों न हो। फ़िल्म बना लेना ही काफ़ी नहीं है। फ़िल्म का दर्शकों तक पहुँचना अत्यंत आवश्यक है। फ़िल्म को दर्शकों तक पहुँचाने में वितरक अपना दायित्व निभाते हैं। कुछ समय पहले तक और आज भी कई परिस्थितियों में हाल, परदा, प्रोजेक्टर, प्रोजेक्टर मैन आदि की भी जरूरत होती है। फ़िल्म बनाना काफ़ी खर्चीला कार्य है। फ़िल्म बन नहीं सकती है, यदि उसमें खर्च होने वाली रकम का इंतजाम न हो सके। इसके लिए कभी निर्देशक की पत्नी को अपने गहने-जेवर गिरवी रखने पड़ते हैं, कभी अपने आभूषण बेचने पड़ते हैं। हर बार निर्देशक इतना भाग्यशाली नहीं होता है। फ़िल्म बनाने के लिए फ़ाइनेंसर एक प्रमुख घटक है। और एक काम होना है, सेंसर सार्टिफ़िकेट मिलना। यानि फ़िल्म बनाना एक सामूहिक क्रिया है।

तो इस तरह स्क्रीनप्ले राइटर, संवाद लेखक, कैमरामैन, संपादक, निर्देशक, अभिनेताओं, फ़ाइनेंसर के सहयोग से एक फ़िल्म तैयार होती है और दर्शकों तक पहुँचती है। एक समय इसे देखने के लिए सिनेमा हाल जाना अनिवार्य था, अथवा